कहानी

पाना था सो पा लिया

सुनसान सड़क पर बस ड्राइवर ने रफ़्तार तेज कर दी थी। रामदास कंडक्टर ने तो आज कमाल ही कर दिया था–तीस सीटों वाली बस में साठ यात्रियों को ठूंस दिया था।खचाखच भरी बस में सांस लेना भी मुश्किल हो रहा था। कोई सीट पर सिमटा था, कोई हैंडल पकड़कर लटक रहा था। बच्चे चिड़चिड़ा रहे थे, कुछ लोग मूंगफली खाकर समय काट रहे थे।इसी भीड़ में मेरी नज़र एक वृद्धा पर पड़ी। वह कोने में बैठी थी, अपनी छोटी-सी पोटली जांघ के नीचे दबाए। चेहरा थका हुआ, आंखों में बेबसी साफ झलक रही थी। मैं उसके पास ही खड़ा था।जेठ की तपती दोपहर यात्रियों को बेहाल कर रही थी। लोग खिड़की से मुंह बाहर निकालकर हवा तलाश रहे थे। कोई रूमाल से पसीना पोंछ रहा था, कोई टोपी को पंखा बना चुका था।वृद्धा हर किसी को पानी पीते हुए बड़ी उम्मीद से देखती, पर कोई उसकी ओर ध्यान नहीं देता।मैंने अपनी पानी की बोतल उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, 'अम्मा, पानी लोगी? 'उसने बिना कुछ कहे बोतल ले ली और गटागट पी गई। फिर कृतज्ञता से मेरी ओर देखने लगी।अगले स्टॉप पर बस रुकी तो मैंने दो और बोतलें खरीद लीं। एक उसे दी। उसने मेरा हाथ माथे से लगाते हुए कहा, 'बेटा, तेरा भला हो। 'थोड़ी देर बाद वह ऊंघने लगी। मैंने उसे सहारा देकर कहा, 'अम्मा, बस बीस मिनट रुकेगी, कुछ खा लेते हैं। 'हम दोनों सामने वाले छोटे से होटल में बैठ गए। 'क्या खाओगी अम्मा? ' 'बेटा, जो दे देगा खा लूंगी... कल से भूखी हूं। 'उसकी आवाज़ ने जैसे भीतर तक झकझोर दिया।इसी बीच उसकी पोटली खुल गई। सामान समेटते हुए एक पुरानी फोटो नीचे गिर गई। मैंने उठाकर देखा–एक छोटे बच्चे की तस्वीर। 'अम्मा, ये तुम्हारा बेटा है? 'वृद्धा की आंखों से आंसू बह निकले।

'तीस साल पहले बिछड़ गया... पर मुझे भरोसा है, वो मुझे पहचान लेगा... 'उसकी आवाज में टूटी हुई उम्मीद और अटूट विश्वास दोनों थे।बस ने हॉर्न दिया। हम वापस आकर बैठ गए।मैं अनाथालय में पला-बढ़ा था। वहीं पढ़ाई, नौकरी, विवाह–सब हुआ। अक्सर सुना था कि मुझे कोई छोड़ गया था... पर आज पहली बार 'मां' शब्द भीतर कहीं गूंज रहा था। 'अम्मा, कहां उतरना है?' मैंने पूछा।वह बोली,

'पता नहीं बेटा... जहां उतार देते हैं, उतर जाती हूं। 'मेरे भीतर कुछ दृढ़ हो गया।बस रुकी–मेरा स्टॉप था। मैंने उसका हाथ थामा और कहा,

'अम्मा, चलो... यहीं उतरना है। 'वह बिना कुछ पूछे मेरे साथ उतर गई। 'कहां ले जा रहा है बेटा?' उसने धीमे से पूछा।मैंने भावुक होकर कहा,

'अम्मा, अब तुम मेरे घर चल रही हो... हमेशा के लिए। वहां तुम्हारे अपने हैं–तुम्हारे बच्चे, पोते... 'वह चुप रही, बस मेरे साथ चलती रही।घर पहुंचते ही पत्नी और बच्चे उसे देखकर ऐसे खुश हुए जैसे कोई अपना बरसों बाद लौटा हो। घर में जैसे एक नई रौनक आ गई।दिन बीतने लगे। अम्मा की मुस्कान, उसकी बातें, उसका स्नेह–सबने घर को भर दिया।एक दिन मैं वही पुरानी फोटो देख रहा था। ध्यान से देखा– और जैसे मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई।वह तस्वीर... बचपन में अनाथालय में मेरी ही तो थी।मैं कांपते हाथों से अम्मा के पास गया– 'अम्मा... ये फोटो...? 'वह मुझे ध्यान से देखने लगी। फिर अचानक उसके हाथ मेरे चेहरे को टटोलने लगे... आंखें फैल गईं... और वह रो पड़ी– 'मेरा... बेटा...! 'मैं उसकी गोद में सिर रखकर फूट पड़ा।तीस साल का बिछड़ाव उस एक पल में सिमट गया था।आज सच में लगा– पाना था... सो पा लिया। अब कुछ बाकी नहीं रहा।

अमिता मराठे इंदौर मध्य-प्रदेश

एकता-प्रेमी नेताजी

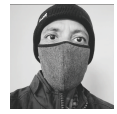

जनाब दिन-रात 'एकता' के गीत गाते रहते थे। उनकी कोई बात 'एकता' के बिना पूरी ही नहीं होती थी। उनके इस 'एकता प्रेम' के चर्चे समूचे शहर से राजधानी तक थे। इन्हीं के दम पर उन्हें एक बड़े दल द्वारा नगर-पालिका चुनाव के मैदान में उतार दिया गया। सातों जात, सभी समाज उनके समर्थन में दिखे। नेताजी भारी बहुमत से जीत कर अध्यक्ष भी बन गए। उनकी इस सफलता पर किसी को कोई अचरज नहीं था। ग़ज़ब तो तब हुआ जब एक पत्रकार ने प्रचंड जीत के आधार बने उनके 'एकता-प्रेम' के बारे में उनकी बूढ़ी माँ से सवाल पूछ लिया। महज दूसरे दर्जे तक पढ़ी हुई माँ ने बेबाक भोलेपन से जवाब भी दे दिया। तब जाकर उनके हवाले से सारे शहर को पता चला कि 'एकता' उनके पिछवाड़े रहने वाली एक लड़की थी। जिस पर उनका लाल बचपन से फ़िदा था। अब तमाम एकता-पसंद सदमे में हैं। पूरे पाँच सालों के लिए रुठ जाने के बाद। अब शहर की जिस एकता की आस नेताजी से थी, वो भी भगवान भरोसे है।।

प्रणय प्रभात श्योपुर (मध्यप्रदेश)

नजरिया

एक बालक के मन में नई-नई बातों को जानने की काफी जिज्ञासा थी। उसके गांव में एक साधु महात्मा रहते थे। एक दिन में बालक उन साधु महात्मा के पास जाकर बोला। मैं एक सफल व्यक्ति बनना चाहता हूं। कृपया मुझे कोई सफलता का रास्ता बताएं। हंसते हुए साधु महात्मा ने कहा बेटा पहले में यह बकरी को सामने वाले कुत्ते से बांध दूं। ऐसा कहते हुए महात्मा ने रस्सी बालक के हाथ में पकड़ा दी। जैसे ही बालक के हाथ में रस्सी आई बकरी उछल के भाग गई। रस्सी छूट गई। फिर काफी देर में परिश्रम के बाद बालक ने चतुराई से काम लेते हुए तेजी से भाग कर बकरी के पैरों को पकड़ लिया। पैर पकड़े जाने से बकरी एकदम भी नहीं भाग पाई और बालक उसे खूटै से बाधने में सफल हुआ। यह देखकर संत बोले शाबाश यही है कामयाबी वह सफलता का रास्ता। जड़ पकड़ने पर पेड़ काबू में आ जाता है अगर हम किसी समस्या की जड़ पढ़ते हैं तो उसका हल समाधान हम आसानी से निकाल सकते हैं।

संजय शर्मा इंदौरी

बॉडी शेमिंग

लाल-लाल आंखें लिये, जब उसने आइने को देखा, तो आईना भी फफक पड़ा,रुआंसे स्वर में बोला- 'लग रहा स्त्री होना महापाप है इस दुनिया में, स्त्री चाहे जितनी बड़ी अधिकारी बन जाए, चाहे जितना बड़ा पद पा जाए फिर भी... ' 'क्या करूँ, कुछ लोग महिलाओं की सूरत देखते हैं ,कुछ उसका शरीर ,जैसे जिसके संस्कार वैसी उसकी नज़र, वैसी उसकी भाषा।' अपने आंसू पोंछते हुए आईने को जवाब देते हुए वह बोली-' बॉडी शेमिंग से मैं नहीं डरती, डर तो मुझे इस बात का है कि सोशल मीडिया पर जिन लोगों ने मुझ पर अभद्र टिप्पणियां कीं और कभी उनकी मां-बहन पर किसी ने अभद्र टिप्पणियां कीं, तो क्या वह बर्दाश्त कर पाएंगे। क्योंकि प्रकृति किसी को नहीं बख्शती ,सबसे साथ पूरा न्याय करती हैं।'

सुरेश सौरभ
निर्मल नगर लखीमपुर खीरी उत्तर प्रदेश-262701 मो- 7860600355

अंधेरगर्दी

कहानी

वे कुल बारह लड़के थे। संजू, सन्नी, पिंकू, टिंकू, अफ्फू, शम्मी, सैफ, सल्लू, सैम, जैक, जानी और जिम्मी। सब की उम्र तेरह से सत्तरह वर्ष के बीच थी। स्कूल की परिक्षायें समाप्त हो चुकी थी और छुट्टियां चल रही थी। एक ही स्कूल में पढ़ने वाले ये बारह लड़के रोज की तरह आज शाम भी प्ले ग्राउंड में जमा हुए और आपस में गपशप करने लगे। शम्मी ने कहा, 'छुट्टियों में घर में पड़े-पड़े भी कितनी बोरियत होती है ना?' अफ्फू बोला, '... और जब स्कूल खुले होते हैं तो टेक्स्ट बुक्स और नोट बुक्स से उलझ-उलझ कर दिल और दिमाग दोनों उब जाते हैं। ... ' '... और बार-बार मोबाइल पर गेम खेलने या फिर टीवी देखने का दिल करता है।' सैम बीच में ही बोल पड़ा।जैक ने कहा, 'अब तो टीवी देख-देख कर और मोबाइल पर गेम खेल-खेल कर भी मन उब चुका है। ' 'सच पूछो तो अब तो रोज-रोज शाम को इस प्ले ग्राउंड में आने में भी बोरियत होने लगी है।' जानी बोला। 'फिक्र मत करो। इसी तरह बोरियत भरे कुछ और दिन गुजरेंगे और स्कूल फिर से खुल जायेंगे।' सल्लू ने तंज कसा। '... और फिर से वही टेक्स्ट बुक्स और नोट बुक्स से उलझने की मगजमारी शुरू हो जायेगी।' सैफ ने कहा। 'लेकिन पढ़ना-लिखना भी तो जरूरी है।' संजू बोला। 'अगर ढंग से पढ़ाई-लिखाई नहीं करेंगे तो एक अच्छी जिंदगी कैसे जी सकेंगे।' सन्नी ने संजू का समर्थन किया। 'अगर शांति से आराम भरा जीवन जीना है तो पढ़ाई से तो नहीं भाग सकते।' पिंकू बोला। 'यह बात तो बिलकुल ठीक है।' टिंकू ने कहा। 'लेकिन जब तक स्कूल नहीं खुलते तब तक तो कोई मस्ती कर ही सकते हैं।' जिम्मी बोला। 'हां, बिल्कुल कर सकते हैं।' अफ्फू, शम्मी, सैफ, सल्लू, सैम, जैक और जानी ने जिम्मी की बात का समर्थन किया। 'पढ़ाई-लिखाई, मोबाइल और टीवी से कुछ अलग और रोमांचक! सोचो ऐसा क्या हो सकता है?' अफ्फू ने खुद भी कुछ सोचने की कोशिश करते हुए कहा। 'ऐसे किसी मनोरंजन के लिए भला पिकनिक से अच्छा और क्या हो सकता है?' सैम ने कहा। 'पिकनिक? गुड आइडिया! मगर पिकनिक के लिए जायेंगे कहां?' शम्मी ने आंखें और हाथ नचाते हुए। 'रोमांचक पिकनिक के लिए चिड़ियाघर घर से अच्छी जगह क्या हो सकती है!' जैक ने प्रस्ताव रखा। 'हां चिड़ियाघर ठीक है।' अफ्फू, शम्मी, सैफ, सल्लू, सैम, जानी और जिम्मी ने खुशी से हामी भरी।अफ्फू ने सवाल उठाया, 'मगर चिड़ियाघर जायेंगे कैसे?' 'चिड़ियाघर या तो बस से जा सकते हैं या फिर ट्रेन से।' सैफ ने कहा।सैम ने सवाल उठाया, 'बस या ट्रेन से चिड़ियाघर तक जाने के लिए जो पैसे चाहिए वो कहां से आयेंगे। पैसे तो किसी के पास हैं नहीं। 'जिम्मी बोला, 'पहले हिसाब तो लगाओ कितने पैसों की जरूरत पड़ेगी।' जैक ने हिसाब लगाया, 'बस से जाने पर प्रति व्यक्ति एक सौ बीस रूपए आने-जाने का किराया और बीस रूपए चिड़ियाघर का टिकट लगेगा। इस तरह प्रति व्यक्ति एक सौ चालीस रूपए के हिसाब से सोलह सौ अस्सी रूपए चाहिए। ' 'अरे बाप रे, यह तो बहुत ज्यादा है। इतने पैसे कहां से आयेंगे?' शम्मी ने कहा।संजू हंसा, 'ये हवाई किले बनाना बंद करो और शांति से अगले क्लास की पढ़ाई की तैयारी करो। ' 'ज्यादा उड़ने से गिरने का डर रहता है।' सन्नी ने संजू का समर्थन किया।पिंकू और टिंकू ने भी इस बात पर सहमति जताई।सल्लू को गुस्सा आ गया, 'तुम लोग तो चुप ही बैठो। खुद तो कुछ करने की हिम्मत नहीं अगर कोई दूसरा कुछ करना चाहे तो टांग खिंचाई में सबसे आगे। 'सल्लू की इस बात पर अफ्फू, शम्मी, सैफ, सैम, जैक, जानी और जिम्मी ठहाका लगा कर हंसने लगे।सैम ने कहा, 'ट्रेन से जाने में तो इससे कम पैसे खर्च होंगे। 'जिम्मी ने हिसाब लगाया गया, 'ट्रेन से जाने पर प्रति व्यक्ति तीस रूपए आने-जाने का किराया और बीस रूपए चिड़ियाघर का टिकट लगेगा। इस तरह प्रति व्यक्ति पचास रूपए के हिसाब से छह सौ रूपए खर्च होंगे। 'अफ्फू बोला, 'यह हो सकता है। पचास-पचास रूपए तो हम सब अपने-अपने घरों से लेकर आ सकते हैं। इतने में हमारा काम हो जाएगा। 'लेकिन सैम ने ऐतराज जताया, 'इतने पैसों में हमारा काम नहीं हो पाएगा। 'शम्मी ने पूछा, 'क्यों नहीं होगा। सीधा-सीधा हिसाब है। जितने पैसों का खर्चा है सबके पचास-पचास रूपए निकालने से वो पूरा हो जाता है।' शम्मी की बात का जवाब जैक ने दिया, 'अगर सारा दिन घर से बाहर रहेंगे तो कुछ खाने के लिए चाहिए या नहीं? उसके लिए पैसे किधर से आयेंगे? 'सैफ, 'हां, बात में दम है। खाने के लिए तो कुछ-न-कुछ चाहिए। 'जानी ने सर हिलाया, '... और अपने घर से पचास रूपयों से ज्यादा किसी को नहीं मिलने वाला। 'सब सोच में पड़ गये। थोड़ी देर सन्नाटा रहा फिर सल्लू बोला, 'मेरे पास एक आयडिया है लेकिन संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू इस पर राजी नहीं होंगे। 'जिम्मी ने कहा, 'पहले आयडिया तो बताओ। ' 'तो फिर सुनो...' सल्लू ने कहा, 'हम सब यहां से ट्रेन से चलेंगे टिकट लेकर लेकिन वापस लौटेंगे बिना टिकट के और इस तरह टिकट के जो पैसे बचेंगे उससे खाने-पीने का इंतजाम कर लिया जायेगा। ' 'यह राजी होने वाली बात ही नहीं है।' संजू, ने तुरंत आपत्ति की। 'तुम कानून तोड़ने की बात कर रहे हो।' सन्नी बिफर गया। 'हम यह बिल्कुल नहीं कर सकते हैं।' पिंकू ने दृढ़ शब्दों में कहा। 'और ना ही तुम्हें ऐसी सलाह दे सकते हैं।' टिंकू ने समझाने वाले अंदाज में कहा।अफ्फू ने कहा, 'ये तो ठहरे पैदाइशी बुजदिल और डरपोक। इन्हें बकने दो और आगे का प्रोग्राम बनाओ।' सैम ने सवाल उठाया, 'लेकिन पैसे फिर भी कम पड़ेंगे। बेटिकट आकर हम सिर्फ एक सौ अस्सी रूपए बचा सकते हैं और इतने पैसों में बारह समोसे भी मुश्किल से आयेंगे। क्या सिर्फ एक समोसा खाकर पूरे दिन रहा जा सकता है? 'शम्मी ने तुरंत कहा, 'तो यहां से भी बेटिकट ही चलेंगे और दो समोसे खा लेंगे। एक दिन तो निकल ही जायेगा। 'सब राजी हो गए मगर संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू इसके लिए तैयार नहीं थे।सब मिलकर संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू को तरह-तरह से समझाने लगे। उल्टे-सीधे उकसाने और भड़काने वाले तर्क दिये गये। हिम्मत और मर्दानगी को ललकारा गया। दोस्ती यारी की कसमें खाई गईं। आखिरकार अनमने मन से संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू भी पिकनिक पर जाने के लिए राजी हो गए।तय हुआ कि सभी लड़के अपने-अपने घरों से पचास-पचास

रूपए और पानी की बोतल लेकर आयेंगे। जमा हुए छह सौ रूपयों से दो सौ चालीस रूपए चिड़ियाघर में अंदर जाने के लिए टिकट खरीदने पर खर्च हो जायेंगे। बाकी के बचे हुए तीन सौ साठ रूपयों में से एक सौ अस्सी रूपयों के बिस्कीट खरीदे जायेंगे और बाकी के एक सौ अस्सी रूपयों का समोसा खरीदा जायेगा। यहां से चिड़ियाघर तक ट्रेन से जाने और वापस आने के लिए के लिए टिकट खरीदने पर कोई पैसा खर्च नहीं किया जायेगा। अब आखिरी सवाल यह बाकी रह गया कि दिन भर की इस पिकनिक के लिए घर में क्या बोलकर जायेंगे। तय किया गया कि घर में यह बोलकर जायेंगे कि क्रिकेट मैच खेलने जा रहे हैं। इस बहाने दिन भर घर से बाहर रहने की अनुमति मिल जायेगी और पचास रूपए भी आसानी से मिल जायेंगे। हो सकता है बिस्कीट और नमकीन के एकाध पैकेट भी मिल जायें।नियत दिन को नियत समय पर तेरह से सत्तरह वर्ष के ये सभी बारह लड़के रेलवे स्टेशन पर जमा हुए और चिड़ियाघर के लिए ट्रेन से निकल पड़े। सभी लड़के दिन भर चिड़ियाघर घूमते रहे और मस्ती करते रहे। शाम को सभी लड़के चिड़ियाघर स्टेशन से ट्रेन पकड़कर वापस अपने स्टेशन पर उतरे लेकिन प्लेटफार्म से बाहर निकलते समय निकास द्वार पर टीसी ने उन्हें रोक लिया, 'टिकट? 'सभी लड़के एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। टीसी समझ गया इनके पास टिकट नहीं है। बोला, 'जल्दी करो। एक-दूसरे की शक्ल मत देखो। टिकट निकालो। 'मगर उनके पास टिकट नहीं था। अफ्फू बोला, 'हमारे पास टिकट नहीं है, अंकल। 'निकास द्वार पर भीड़ बढ़ती देख टीसी ने सभी लड़कों को एक कोने में खड़ा कर दिया और पूछा, 'कहां से आ रहे हो? ' 'चिड़ियाघर से अंकल।' सैम ने बताया ? 'चलो सभी लड़के पंद्रह रूपए टिकट और दो सौ पचास रूपए जुर्माना का भरो।' टीसी बोला। 'हमारे पास कोई पैसा नहीं है अंकल। हमें माफ कर दो और जाने दो।' शम्मी बोला।टीसी नहीं माना। जैक बोला, 'हमें जाने दो न अंकल। माफ कर दो। 'मगर टीसी टस-से-मस नहीं हो रहा था। 'हम से गलती हो गई अंकल। कान पकड़ते हैं...' सैफ ने अपने कान पकड़ते हुए कहा, '... आगे ऐसा कभी नहीं करेंगे। 'जानी ने भी अपने कान पकड़े, 'हम मानते हैं अंकल कि हमने गलत काम किया लेकिन हमारे पास पैसे नहीं हैं। हमें माफ कर दो और जाने दो। हम फिर ऐसा कभी नहीं करेंगे। 'लेकिन टीसी नहीं माना, 'कभी नहीं। जुर्माना तो तुम्हें भरना पड़ेगा। अगर तुम्हें यूं ही छोड़ दिया गया तो इस उम्र में यह अपराध करने वाले तुम लोग आगे ना जाने क्या-क्या अपराध करोगे। अगर तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं तो हम तुम्हें मजिस्ट्रेट के सामने पेश करेंगे। मजिस्ट्रेट ही तय करेंगे कि तुम्हारे साथ क्या होना चाहिए। 'संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू रोने लगे।टीसी ने उन सभी लड़कों को रेलवे मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर दिया और मजिस्ट्रेट ने सभी लड़कों को हजार-हजार रूपयों का जुर्माना लगाया और आदेश दिया कि चूंकि इन लड़कों के पास जुर्माना भरने के पैसे नहीं हैं इसलिए इनके अभिभावकों को बुलाकर उनसे यह जुर्माना वसूल किया जाए।सभी लड़कों से उनके अभिभावकों का मोबाइल नंबर लिया गया और सभी अभिभावकों को सूचित किया गया कि उनके लड़के को बिना टिकट यात्रा करते हुए पकड़े जाने पर एक हजार रूपयों का जुर्माना लगाया गया है और उन्हें निर्देश दिया गया कि वे आकर यह जुर्माना भरें और अपने लड़के को ले जायें। संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू के पिता आये। वो झेंपे हुए थे और घबराये हुए भी। स्पष्ट रूप से वे अपने लड़कों की हरकत पर शर्मिंदा थे। उन्होंने चुपचाप जुर्माने की रकम भरी और अपने-अपने लड़के को अपने साथ लेकर चले गए। इन चारों लड़कों को अपने-अपने घरों में भारी डांट-डपट का सामना करना पड़ा और घर से निकलने पर पाबंदी लग गई।जब सैम, जैक, जानी और जिम्मी के पिता रेलवे स्टेशन पहुंचे तो वे ना तो झेंपे हुए थे ना घबराये हुए और ना ही शरमाये हुए। वे सबसे पहले अपने-अपने लड़कों से मिले और फिर उनके समर्थन में तर्क देने लगे, 'माना कि लड़कों ने गुनाह किया लेकिन गुनाह करने से ज्यादा अहम है गुनाह का अहसास होना। उन्हें अपने गुनाह का अहसास हुआ और उन्होंने अपना गुनाह कबूल भी किया। गुनाह कबूल करने के बाद तो ऊपरवाला भी माफ कर देता है लेकिन इंडिया में माफ नहीं किया जाता बल्कि जुर्माना वसूल किया जाता है। 'घर पहुंचकर अपने-अपने घरों में भी ये लोग यही बात करते रहे कि लड़कों द्वारा बेटिकट यात्रा का अपराध स्वीकार कर लेने के बाद टीसी को चाहिए था कि वह लड़कों को छोड़ देता।अफ्फू, शम्मी, सैफ और सल्लू के पिता चिल्लाते हुए रेलवे के दफ्तर में घुसे, 'क्या हो गया अगर लड़के बेटिकट ट्रेन में चढ़ गये? बच्चे हैं, गलती हो जाती है। अगर बच्चे गुमराह हो गये, रास्ता भटक गए तो क्या सरकार उन्हें पकड़ लेगी? जुर्माना वसूल करेगी? ये तो हद हो गई इस मुल्क में। 'वे जुर्माना भरने को तैयार नहीं थे लेकिन मजिस्ट्रेट का आदेश था इसलिए उन्हें जुर्माना भरना पड़ा। अपने घरों में आकर भी वे यही बात कर रहे थे कि इन लड़कों का बेटिकट सफर करना उतना गलत नहीं जितना गलत उन्हें पकड़ना और उन पर जुर्माना लगाना है।दूसरे दिन रोज की तरह रोज के समय ये लड़के फिर से मिले लेकिन संजू, सन्नी, पिंकू और टिंकू नहीं आये क्योंकि उनके घर वालों ने उनके घर से निकलने पर पाबंदी लगा दी थी। सैम, जैक, जानी, जिम्मी, अफ्फू, शम्मी, सैफ और सल्लू सब के सब बहुत गुस्से में थे। उन सब को उस टीसी पर बहुत गुस्सा आ रहा था। उनकी नजर में टीसी गुनाहगार था और सारे फसाद की जड़ था। अगर वह नहीं पकड़ता या पकड़कर छोड़ देता तो यह सब नहीं होता। सभी लड़कों को यही लग रहा था कि उनके बेटिकट यात्रा करने में कुछ भी गलत नहीं था बल्कि टीसी द्वारा उन्हें पकड़ लेना गलत था और उन्हें पकड़ कर छोड़ देने के बजाय मजिस्ट्रेट के सामने पेश कर देना तो गलत के सिवा कुछ हो ही नहीं सकता था।उन लड़कों में से किसी के दिलो-दिमाग में कहीं पर भी यह बात नहीं थी कि गलत दरअसल उनका बिना टिकट यात्रा करना था टीसी द्वारा उन्हें पकड़ लेना नहीं। अगर वे बिना टिकट यात्रा का अपराध ना करते तो टीसी द्वारा पकड़े ना जाते और मजिस्ट्रेट के सामने पेश नहीं किए जाते। लेकिन उन्हें कहीं से भी ऐसा नहीं लग रहा था कि उनकी खुद की बिना टिकट यात्रा गलत थी। हर तरफ से उन्हें ऐसा ही लग रहा था कि टीसी द्वारा उन्हें पकड़ कर नहीं छोड़ा जाना गलत था।लेकिन क्या ऐसा सिर्फ इन लड़कों को लग रहा था। कदाचित नहीं, संभवतः छोटे-छोटे बच्चों से लेकर सत्तर-अस्सी साल और उससे भी अधिक उम्र के बड़े बुजुर्ग भी ऐसा ही सोचते हैं। आमतौर पर अपनी की हुई गलती किसी को भी गलत नहीं लगती लेकिन अपनी गलती से उपजे हुए दुष्परिणाम सभी को गलत लगते हैं। टीसी को गलत समझने वाले ये सभी लड़के गुस्से से उबल रहे थे और गुस्से में बड़े-बड़े ज्ञानियों, जानकारों और तजुर्बेकारों की सोचने-समझने की शक्ति खत्म हो जाती है इन तेरह से सत्तरह साल के लड़कों की क्या बिसात थी। गुस्से में उबलते हुए ये लड़के टीसी की गलती के लिए उसे तुरंत सबक सिखाना चाहते थे। सबने तय किया कि स्टेशन चलकर उस टीसी की पिटाई की जाय। वे सब हॉकी स्टिक, चमड़े की बेल्ट और साईकिल की चेन लेकर स्टेशन पहुंचे और टीसी को घेर कर मारना शुरू किया। कई रेलवे कर्मचारियों ने बीच बचाव की कोशिश की। इन लड़कों ने उन्हें भी पीटा। खाने-पीने के स्टॉल पर तोड़फोड़ की और आग लगा दी, स्टेशन पर खड़े यात्रियों के साथ लूटपाट मचाई, महिला यात्रियों की इज्जत लूटने की कोशिश की। तेरह से सत्तरह साल के ये बेकाबू छोकरे तब काबू में आये जब पुलिस ने घटनास्थल पर पहुंचकर सख्ती दिखाई और उन्हें गिरफ्तार कर लिया। सभी लड़कों ने बयान दिया कि चूंकि टीसी ने उन्हें बेटिकट पकड़ने के बाद छोड़ा नहीं और नहीं छोड़कर उनके साथ ज्यादती की इसलिए टीसी को सबक सिखाना जरूरी था ताकि वह आगे बेटिकट विद्यार्थियों को परेशान ना करे।लेकिन इस बार मामला बिना टिकट यात्रा का नहीं था बल्कि दंगा फसाद, तोड़फोड़, आगजनी, लूटपाट और बलात्कार की कोशिश का था। लिहाजा वे लड़के सिर्फ जुर्माना भर कर छूट नहीं सकते थे। दूसरे दिन पुलिस द्वारा उन लड़कों को अदालत में पेश किया गया।शाम को टीवी पर खबर आ रही थी, 'कल रेलवे स्टेशन पर दंगा फसाद, तोड़फोड़, आगजनी, लूटपाट और बलात्कार की कोशिश करने वाले लड़कों को आज पुलिस ने अदालत में पेश किया। अदालत ने इस केस को जुवेनाइल कोर्ट को ट्रांसफर कर दिया है क्योंकि सभी अभियुक्तों की उम्र अठारह साल से कम है। अदालत ने कहा 'जुवेनाइल एक्ट के अनुसार यदि कोई नाबालिग कानून तोड़ता है तो चाहे वह कितना भी गंभीर अपराध क्यों न हो उसे अधिक-से-अधिक तीन साल के लिए बाल सुधार गृह में रखने की सजा दी जा सकती है। किसी भी नाबालिग को किसी भी हालत में तीन साल से अधिक की सजा नहीं दी जा सकती और न ही उसपर किसी वयस्क की तरह मुकदमा चलाकर उसे जेल में रखा जा सकता है।' यह दिल दे कि परसों रेलवे स्टेशन पर टीसी ने इन लड़कों को बेटिकट यात्रा करते हुए पकड़ा था जिसके दंडस्वरूप इनसे एक-एक हजार रूपए का जुर्माना वसूल किया गया था। 'तुक्कड़ टी स्टॉल पर बैठा चाय की चुस्की लेते हुए टीवी पर यह समाचार देख रहा काकुशि बड़बड़ाया, 'अजीब अंधेरगर्दी है। बारह वर्ष से अधिक और अठारह वर्ष से कम लड़कों का ट्रेन और बस में टिकट तो पूरा लगता है और उनके बेटिकट होने पर सजा के तौर पर उनसे जुर्माना भी वसूला जा सकता है लेकिन वही लड़का जब दंगा फसाद, तोड़फोड़, आगजनी, लूटपाट और बलात्कार की कोशिश जैसे संगीन अपराध करता है तो उस पर इसलिए मुकदमा नहीं चलाया जा सकता और सजा नहीं दी जा सकती क्योंकि वह नाबालिग है? '

के. के. सिन्हा
विरार (पश्चिम)
महाराष्ट्र 9320887728

बाल कहानी

जंगल में मंगल

पूरे मयूर वन में चम्पू खरगोश बहुत समझदार?और होशियार माना जाता था।मयूर वन के सभी निवासी चम्पू खरगोश की कलम को सलाम करते थे कुछ भी लिखवाना हो चित्र बनाना हो चम्पू खरगोश मिनटों में ये काम कर देता था।चम्पू खरगोश की इस कला से जंगल प्रेस क्लब के हाथी दादा बहुत प्रभावित थे ।एक दिन उन्होंने चम्पू खरगोश को बुलाकर कहा- चम्पू मैं मयूर वन में छोटा सा अखबार निकालना चाहता हूं जिससे मयूर वन के सभी साथियों को खबर मिलती रहे।क्या तुम मेरी मदद करोगे। हां दादा जरूर । तो चलो मैं तुम्हें बताता हूं।हाथी दादा जगह घर के एक बड़े कमरे में ले गये? वहां एक मशीन लगी थी ।हाथी दादा ने कहा मेरे दादाजी ने ये प्रिंटिंग मशीन खरीदी थी उनकी इच्छा थी कि वे एक अखबार निकाले लेकिन तबियत खराब होने के कारण समाचार पत्र? नही निकाल सके।मेरी इच्छा है कि मैं दादाजी का सपना पूरा कर सकूं। इसमें सोचने की बात ही कहां है दादा ,अभी माधवबाग चलते हैं मेरे दोस्त चिंटू बंदर के पापा की प्रिंटिंग प्रेस है।वहां चलकर सब पूछ लेते हैं। हाथी दादा ने अपनी बाईक निकाली चम्पू खरगोश को आगे बैठाया।हवा की गति से दौड़ती हुई कुछ ही समय में बाईक माधव बाग जा पहुंची। चम्पू खरगोश को देखते ही चिंटू बंदर खुशी से बोल पड़ा अरे !दोस्त तुम। हां बहुत दिन हो गये थे ना मिले इसलिए तुम्हें मिलने आ गया। चिंटू बंदर हाथी दादा ,चिम्पू खरगोश को अपनी प्रेस में ले गया ,चाय नाश्ता सबने मिलकर किया।चम्पू खरगोश ने बताया हाथी दादा अखबार निकालना चाहते हैं मशीन भी है जो बंद पड़ी है इसे चालू करना है। तुम्हारी हेल्प चाहिए दोस्त। दोस्त दोस्त के काम न आये वो कैसा दोस्त ?मैं पूरी मदद करुंगा तुम्हारी प्रेस कल से ही चालू हो जाएगी।मेरी प्रेस का इंजिनियर लम्बू जिराफ कल ही वहां आकर ठीक कर? देगा।रही बात कागज स्याही

और अन्य जरूरत चीजों की वो भी मैं भेज दूगां। हाथी दादा चिंटू बंदर से यह सब सुन खुशी से उछल पड़े बोले मेनी मेनी थैंक्स। दूसरे दिन इंजिनियर लंबू जिराफ ने हाथी दादा के घर आकर बंद मशीन ठीक कर चालू कर दी।चम्पू खरगोश को मशीन चालू करके अखबार प्रिंट करने की सारी बातें अच्छे से समझा दी । हाथी दादा ने चम्पू से अखबार का अच्छा सा नाम रखने को जब कहा तब चम्पू खरगोश बोल उठा' जंगल में मंगल '। हाथी दादा बोले परफेक्ट नाम सुझाया है बस यही नाम हमारे कल से शुरू होने वाले अखबार का रहेगा।मैं प्रबंध सम्पादक ,तुम संपादक रहोगे और एक उपसंपादक भी रखना पड़ेगा ।क्यों न मीकू चूहे को इस पद की जिम्मेदारी दे दी जाए वो पढ़ने लिखने में भी बड़ा होशियार है। चम्पू खरगोश जोर जोर से हंसने लगा । हंसते हंसते पेट में बल पड़ने लगे तब हाथी दादा ने कहा -ऐसा मैंने क्या कह दिया जो तुम मुझ पर हंस रहे हो। चम्पू खरगोश -दादा फिर तो हमने अखबार अच्छे स ?निकाल लिया ।ओर आप कितने भोले हो, अगर मीकू चूहे को उपसंपादक बना दिया तो गजब हो जाएगा वो सारे कागज कुतर कुतर कर खा जायेगा फिर हम अखबार प्रिंट कैसे करेंगे। हाथी दादा-हां ये तो मैंने सोचा ही नहीं शरीर से मोटा हूं पर बुद्धि में तुमसे कमजोर। चलो शेरसिह को ही उपसंपादक बना देते हैं थोड़ी धाक रहेगी तो अखबार? चलाने में हमें दिक्कत नहीं होगी। मयूर वन में मुनादी करने वाली जिमी सारस को हाथी दादा ने बुलवाया और कहा कल 'जंगल में मंगल 'समाचार का शुभारंभ हो रहा है सभी निवासियों को खबर कर? दो । दूसरे दिन सुबह नो बजे मयूर वन के सभी निवासियों की उपस्थिति में हाथी दादा ने प्रिंटिंग मशीन का जैसे ही बटन दबाया ।जंगल में मंगल सुनहरा अखबार छप कर मशीन से बाहर आ गया।चिम्पू खरगोश ने गुड़ चना धनिया से सबका मुंह मीठा कराया।किट्टी बिल्ली, मासूम गेंडा, मुनमुन गिलहरी ,रंगा सियार,जीतू भेड़िया,बम-बम चीता,जया बतख,बम-बम कछुआ,कालू कौवा ,सुरभि सारस ,मिटठु तोता ,सुरीली कोयल , चुन-चुन चिड़िया ,शेर सिंह ,मीकू चूहा सब बड़े खुश थे अब उन्हें अपने प्रिय अखबार 'जंगल में मंगल' से मयूर वन के साथ दूसरे वनों की खबरें भी पढ़ने को मिला करेगी।इतने में उपसंपादक शेर सिंह रसीद कट्टा ले आया सबको अखबार की नियमित सदस्यता दिलाकर महिना शुल्क माह के अंत में जमा करने का निवेदन किया।शेर सिंह का कहना भला कौन